



हिन्दी साहित्य परिषद् की स्मारिका

# संस्कृति





# दामोदर घाटी निगम

डी.वी.सी. टावर्स, वी.आई.पी. रोड, कोलकाता-700054



## सदस्य सचिव महोदय का संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि बोकारो ताप विद्युत केन्द्र काँलोनी परिसर में अवस्थित हिंदी साहित्य परिषद अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रही है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इस भाषा के विकास में हमारी कोशिश सदैव जारी रहनी चाहिए। परिषद ने पिछले 50 वर्षों से जिस तन्मयता से हिंदी के प्रचार-प्रसार में त्वरित गति दिखाकर इस गौरवपूर्ण “स्वर्ण जयंती” के मुकाम तक की सफर पूरा की है, परिषद के अध्यक्ष, सचिव एवं सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

परिषद द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिका “संसृति” की सफलता की अनेकानेक शुभकामनाएँ। आशा है इस पत्रिका में छपे लेख से न ही सिर्फ बोकारो ताप विद्युत केन्द्र के अधिकारी व कर्मचारी लाभान्वित होंगे अपितु निगम स्तर पर भी इसकी सुगंध मिलती रहेगी।

धन्यवाद।

(डॉ. जॉन मथाई)  
सदस्य सचिव  
दामोदर घाटी निगम



# दामोदर घाटी निगम

डी.वी.सी. टावर्स, वी.आई.पी. रोड, कोलकाता-700054



## कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) का सदेश

माँ, मातृभूमि और मातृभाषा की सेवा सदैव प्रशंसनीय है। हिंदी हमारी मातृभाषा है और हिंदी साहित्य परिषद, बोकारो थर्मल द्वारा जिस प्रकार हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रगति हो रही है, यह अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। किसी भी संस्था का 'स्वर्ण जयंती' मनाना अत्यंत हर्ष का विषय है। हिंदी साहित्य परिषद ने पचास वसंत के जो रंगमय आवरण सहेज रखी है, यह रंग बोकारो ताप विद्युत केन्द्र के साथ-साथ निगम स्तर तक फैलता रहे, ऐसी कामना है।

परिषद द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका की सफलता की हृदय से मंगलकामनाएँ। ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, प्रबंधन, चिकित्सा आदि विषयों पर उपलब्ध लेख इसे संग्रहणीय अंक बनाने में मदद करेंगे।

धन्यवाद।

  
०६/३/२५

(राकेश रंजन)  
कार्यपालक निदेशक (मा.सं.)  
दामोदर घाटी निगम



# दामोदर घाटी निगम

बोकारो ताप विद्युत केन्द्र, बोकारो थर्मल, बोकारो



## मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान का संदेश

प्रिय सहकर्मीगण और हिंदी साहित्य सुधिजनों,

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि बोकारो ताप विद्युत केन्द्र के प्रांगण में अवस्थित हिंदी साहित्य परिषद इस वर्ष अपनी 50वीं वर्षगांठ मना रही है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ। अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में हिंदी साहित्य परिषद की पत्रिका ‘‘संसृति’’ के प्रकाशन पर मुझे बेहद खुशी हो रही है।

पुस्तकालय सिर्फ पुस्तकों का संग्रह नहीं होता, बल्कि यह ज्ञान का भंडार और विचारों का मंच होता है। यहाँ पर हमने समय-समय पर नई पुस्तकों और संसाधनों को जोड़ा है, ताकि हमारी समृद्धि और समझ बढ़ती रहे। यह पुस्तकालय उन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है जो ज्ञान और सीखने की चाहत रखते हैं।

इस यात्रा में हमने कई मील के पत्थर पार किए हैं, और यह सब आपके सहयोग और समर्थन के बिना संभव नहीं हो पाता। मैं उन सभी कर्मचारियों, पुस्तक प्रेमियों और परिषद के सदस्यों, बोकारो नागरीकवृद्ध का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने हिंदी साहित्य परिषद को आज इस मुकाम पर पहुँचाया है।

आइए, इस अवसर पर हम सभी मिलकर परिषद के विकास और समृद्धि के लिए एक नया संकल्प लें। हम यह सुनिश्चित करें कि यह ज्ञान का मंदिर आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही उपयोगी और प्रेरणादायक बना रहे।

“किताबों में बसी है, सदियों की रोशनी,

हर पने में छिपा है, ज्ञान की एक दुनिया।“

‘संसृति’ पत्रिका के प्रकाशन पर अनेकानेक शुभकामनाएँ!

*माननीय जी ५८३*

(आनंद मोहन प्रसाद)

मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान  
दायानी, बोताविके, बोकारो

सह मुख्य संरक्षक  
हिंदी साहित्य परिषद, बोकारो थर्मल

## संपादकीय



हिंदी साहित्य परिषद की ई-पत्रिका “संसृति” को आप तक उपलब्ध होने पर काफी गर्व का अनुभव हो रहा है। परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष (1974 से 2024) में इस पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी प्रचार-प्रसार की कोशिश को एक नई दिशा व दशा प्राप्त होगी।

संसृति को सिर्फ कहानी व कविताओं तक ही सीमित रखने का प्रयास नहीं है बल्कि तकनीकी, चिकित्सा, प्रबंधन, कला आदि विषयों पर लिखे गए लेख इसे एक संग्रहणीय अंक बनाने में मदद करेंगे। परिषद के अध्यक्ष डॉ. सुमन कुमार झा से काफी प्रोत्साहन मिला। इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में पत्रिका के संपादन हेतु बनी संपादक मण्डल दल के सदस्य श्री सत्यजीत कुमार सिन्हा, सहायक नियंत्रक (या), ईंधन व दक्षता अनुभाग सह संयुक्त सचिव हिंदी साहित्य परिषद, श्री रवि कुमार सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी, दाघानि, बोताविके, श्री मनोज कुमार गुप्ता, शिक्षक, दाघानि मध्य विद्यालय सह संयुक्त सचिव, हिंदी साहित्य परिषद, श्री शिव मोहन गुप्ता, शिक्षक, दाघानि मध्य विद्यालय, बोकारो थर्मल तथा श्री रजत कुमार, सहायक प्रबंधक (आई.टी.), दाघानि, बोताविके का सहयोग काफी प्रशंसनीय रहा। सभी रचनाकारों को रचना की उपलब्धता पर हिंदी साहित्य परिषद आभार व्यक्त करती है।

हिंदी में लिखना आसान है! शुरू तो कीजिए.....

धन्यवाद!

A handwritten signature in blue ink, appearing to read "Dinesh Nath Sharma".

(दीनानाथ शर्मा)

सचिव  
हिंदी साहित्य परिषद  
बोकारो थर्मल, बोकारो

व्यक्त विचार : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में  
व्यक्त लेखकों के अपने हैं। संपादक मण्डल की  
सहमति आवश्यक नहीं है।



संस्कृति



## अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	पृष्ठ संख्या
01	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका	01
02	जिंदगी	04
03	आज महफिल में	04
04	लौट आओ दीदी	05
05	सच या झूठ : जीत किसकी?	09
06	गज़ल	10
07	सभ्यता बनाम सिकुड़ते वन	10
08	दाँतो को स्वस्थ्य रखने के लिए आवश्यक सलाह	11
09	हम हैं हिंदी भाषी	12
10	मैं और मेरी कला यात्रा	13
11	तू मुस्कुराना सीख	14
12	पेड़ लगाओ जीवन बचाओ	14
13	स्वच्छता ही जीवन है	15
14	ईंधन प्रबंधन : एक नज़र	16
15	लक्ष्य प्राप्ति हेतु समूह मीटिंग का हिस्सा बनना	17
16	कृत्रिम बुद्धि और डिजीटाईजेशन	18
17	प्रकृति की गोद में : यात्रा की राह ही असली मंजिल है	21
18	प्रकृति की गोद में : शांति का निवास	22
19	प्रकृति की गोद में : मुस्कान की कहानी	23
20	प्रकृति की गोद में : ॥अंतः अस्तिः प्रारंभः॥	24
21	आज का मोबाइल	25
22	कृषक वेदना	26
23	हिंदी साहित्य परिषद के 50वीं वर्षगांठ पर कविता	26



## स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता उस राष्ट्र की आत्मा होती है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर निष्पाण होता है, उसी प्रकार स्वतंत्रता के बिना राष्ट्र भी निष्पाण प्रतीत होता है। पराधीन देश की जनता स्वाधीनता की हवा में साँस लेना चाहती है किंतु दासता की दृष्टि हवा उन्हें न जीने देती है और न मरने। ठीक यही स्थिति हमारे सोन चिरैया देश ‘भारत’ के साथ भी थी। आजादी की लड़ाई में कई कारकों का योगदान होता है यथा – दृढ़ इच्छा-शक्ति, त्याग व बलिदान की भावना, दमनकारियों के विरुद्ध रणनीति, जन जागरण, कुशल नेतृत्व आदि। किंतु इन सभी कारकों में तालमेल और सामंजस्य से बैठाने वाली कड़ी है – संपर्क भाषा।

हमारे देश में 1652 से भी अधिक मातृभाषाएँ (बोलियाँ) बोली जाती थीं। भाषाई तौर पर इतनी भिन्नता के बावजूद सभी तक पहुँचने के लिए सशक्त और सर्वश्रेष्ठ भाषा के रूप में ‘हिंदी’ ही थी।

उत्तर से दक्षिण तक,  
पूर्व से पश्चिम तक।  
पर्वत से सागर तक,  
भाषा सिर्फ हिंदी से हिंदी तक ॥

सदियों की गुलामी ने हमें गूँगा और बहरा बना दिया था। स्वाधीनता और दासता को पहचानने में अंधा बना दिया था। तब हिंदी ने ही स्वतंत्रता का मतलब समझाया गुलामी का आईना दिखाकर, फिरंगियों ने गोरे चेहरे के पीछे की काली तस्वीर का सच बतलाया। अंग्रेज यह भली-भाँति जानते थे—जब तक अंग्रेजी का बोल-बाला रहेगा, भारत पर शासन करना आसान रहेगा।

स्वतंत्रता आंदोलन के सभी अग्रणी नेता या समझ चुके थे की सबसे पहले प्रत्येक भारतीय को यह आभास कराना नितांत आवश्यक है कि वे पराधीन हैं। हिंदी को राष्ट्र भर में स्थापित करने के लिए बंगाल के केशवचंद्र ने अपने पत्र “‘सुलभ समाचार’” में सन 1873 में लिखा था—“इस समय भारतवर्ष में जितनी भाषाएँ प्रचलित हैं उनमें हिंदी भाषा सर्वोपरि है तथा सर्वश्रेष्ठ प्रचलित है। यदि हिंदी को भारत की एकमात्र भाषा बनाया जाय तो अनायास पूरे देश में एकता संभव हो सकता है।” परिणामतः सभी प्रांतीय नेताओं ने तहे दिल से हिंदी को अपनाने का आह्वान शुरू किया और एकता में अप्रत्याशित इजाफा हुआ। “एकता में बल है” की कुंजी हिंदी के पास ही सुरक्षित है, यह सभी ने महसूस किया। फिर एकता के सामने शेर भी कहाँ टिक सकता है।

आजादी के संग्राम के मजबूत स्तंभ रहे बाल गंगाधर ‘तिलक’ हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी को राष्ट्रीय चेतना का मुख्य अस्त्र मानते थे। उन्होंने सन 1930 ई. में “पंजाब केशरी” नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और यह साबित किया कि जन साधारण तक आजादी संबंधी विचारों को पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम हिंदी ही है। उन्होंने ही अंग्रेजी के बजाय हिंदी में भाषण देते हुए हुंकार भरी – “स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसे मैं प्राप्त करके ही रहूँगा।” तब पूरा देश एक स्वर में आजादी के लिए संकल्पित हो गया।



अंग्रेजी सरकार की नींव को हिला कर रख दिया – हिंदी में दिया गया उनका यह प्रसिद्ध नारा। उन्होंने “नागरी प्रचारिणी” पत्रिका में लिखा था—“यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे के निकट लाना चाहते हैं तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर अन्य कोई सशक्त बल नहीं है।” स्व. तिलक के यह विचार स्वतंत्रता और परतंत्रता के बीच की धूंध को हटाकर, आजादी की रोशनी को देश में आने का रास्ता साफ कर दिया। अब तक लोग नींद से जाग चुके थे और आभासी आजादी को महसूस करने लगे थे। यह कमल “हिंदी” का ही था जो लोगों के मन मस्तिष्क को झंकझोर कर रख दिया था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आंदोलन के विश्लेषण उपरांत समझ गए थे की अंग्रेजी सरकार धन और बाल में काफी ताकतवर है। उन्होंने सन् 1857 ई. के विद्रोह का भी विश्लेषण किया। उन्होंने इस निष्कर्ष को आत्मसात करने में देर नहीं की बिना जन-जन की भागीदारी और तमाम भिन्नताओं को एकरूपता में ढाले बिना आजादी पाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा था – “हिंदी के बिना राष्ट्र गँगा है।” फिर क्या! जन साधारण तक हिंदी की भाषा में अहिंसात्मक तरीके से आजादी का मंत्र पहुँचाना शुरू किया महामानव ने! गैर हिंदी प्रांतों को वरीयता देते हुए हिंदी के प्रसार के लिए अपने पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिणी राज्यों में भेजा। स्वयं गांधी जी ने कई राज्यों का दौरा किया। उनके प्रयत्नों के कारण ही तमिलनाडु में हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह जगा की सभी नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिंदी के महत्व को समझते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार करने लगे।

गाँधी जी ने सन् 1917 में एक परिपत्र निकालकर हिंदी सिखने के कार्य का सूत्रपात किया। उनके प्रयत्नों का ही प्रभाव था कि सन् 1925 के अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन (भरतपुर) के अध्यक्षीय संबोधन गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर हिंदी में संबोधन कर सम्मेलन में जान डाल दी जिसके उपरांत हिंदी की धारा पूरे देश में प्रवाहित होने लगी।

महात्मा गाँधी ने आकलन कर लिया था—हिंदी की धारा पूरे देश में बहने लगी है। उनके द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों में जन भागीदारी बड़ी तेजी से बढ़ने लगी। उन्हें हिंदी के प्रभाव का अंदाजा “चंपारण सत्याग्रह” से ही हो चली थी। धीरे-धीरे आंदोलन की गति उन्होंने तेज करनी शुरू कर दी। बालक, बूढ़े और जवान उनके साथ जुड़ते चले गए। कारवाँ बढ़ता गया। उनके प्रसिद्ध गीत “उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है” का अर्थ और आशय सभी भारतीय समझ गए थे। सभी कंधा से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में आगे बढ़ने लगे और शनैः-समूचा देश अहिंसात्मकता को ढाल बनाकर लड़ाई लड़ने लगा। अंग्रेजी सरकार की चूलें हिलने लगी। उन्हें गाँधी और हिंदी के ताकत का अहसास हो गया था। उन्हें अब लगने लगा था कि सात समुंदर पार वापस जाना ही होगा। गाँधी जी ने यह चमत्कार “हिंदी” को आधार बनाकर ही किया था – कोई अतिशयोक्ति नहीं।



पंजाब में आंदोलन को हिंदी का धार देने के लिए “पंजाब केशरी” लाला लाजपत राय की अमीर भूमिका रही है। हिंदी की ताकत को जानते हुए उन्होंने हिंदी का प्रचार-प्रसार खूब किया। वह एक कुशल पत्रकार भी थे। पत्रकार एक डॉक्टर की भाँति भीड़ का नब्ज टटोलना अच्छी तरह से जानता है। उन्होंने कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की और हिंदी को अनिवार्य करने में अग्रणी भूमिका निभाई। पंजाब में हिंदी की लहर से अंग्रेजी सरकार भयभीत हो गई। आखिरकार अंग्रेजों को भयभीत करने वाली भाषा “हिंदी” ही तो था।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जिन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के “इतिहास पुरुष” के नाम से जाना जाता है – हिंदी की महत्ता को समझते हुए हिंदी का बहुत उपयोग किए। उन्होंने स्वराज के लिए जीवन-भर संघर्ष किया। आजादी के विचारों, आजादी की कीमत, आजादी के महत्व को जनमानस तक पहुँचाने के लिए उन्होंने सन् 1910 में प्रयागराज से “मर्यादा” तथा सन् 1933 में “सनातन धर्म” नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि कई हिंदी पत्रिकाओं की शुरूआत हुई जिससे आंदोलन को काफी बल मिला। जन सामान्य, नेताओं के साथ हो गए जिससे आजादी की लड़ाई सुदूर गाँवों तक फैल गई। इस प्रकार हिंदी ने पूरे देश में एक नई क्रांति ला दी। सभी अब दासता से मुक्त होना चाहते थे। अब लड़ाई अंग्रेजी सरकार और सामान्य जन समूह के बीच शुरू हो गई थी। आजादी की लड़ाई में ऐसी मशाल “हिंदी” ने ही तो जलाई थी।

आजादी प्राप्त करने और आजादी बनाए रखने के लिए हिंदी को पर्याय मानने वाले पुरुषोत्तम दास टंडन सन् 1918 में वाराणसी में “हिंदी विद्यापीठ” की स्थापना की। उन्होंने बड़े सरल ढंग से हिंदी की प्रगति के लिए काम की। शहरों के साथ-साथ गाँव-देहात तक स्वाधीनता की आवश्यकता को समझाते रहे। इस जन जागरण और जन चेतना का कार्य “हिंदी” के द्वारा ही संपन्न हो सका।

**दीनानाथ शर्मा**

सचिव  
हिंदी साहित्य परिषद  
बोकारो शर्मल, बोकारो





संस्कृति



## जिंदगी



जिंदगी! जितना मैं तेरे कारण रोया  
सच, उतना तेरे लिए कभी नहीं रोया।

कब मेरी कष्टी को देने हैं हिचकोले  
मेरे जानिब की आँधियों को पता था गोया।

हर नेकी, हर बदी का हिसाब भला कौन रखें  
चलो माना, मैं भी दूध का नहीं धोया।

आम का पेड़ नहीं निकला जर्मी से पर  
यह सच है मैंने कभी बबूल भी नहीं बोया।

मेरी तेज सांसों से कहीं तेरी नींद ना टूट जाए  
ये सोचकर मैं अक्सर रात-रात भर नहीं सोया।

दैरो-हरम भी गया, और पनघट भी पास था  
ना अंतःकरण शुद्ध हुआ और ना वसन धोया।

जिंदगी की डायरी को अब बंद कर दी मैंने  
अब दर्ज नहीं करता क्या पाया, क्या खोया।

## आज महफिल में

आज महफिल में सारे बेगाने लगे हैं  
मुझे गर्दिश में देख मुस्कुराने लगे हैं।  
जिन -जिन को मैंने दिलों -जाँ से मदद की  
अपनी-अपनी मजबूरियां गिनाने लगे हैं।

चिंगारी जब भी मेरे आशियाने पे गिरी  
वो शोलों को और भी भड़काने लगे हैं।

रौंदकर पौधों को, फूलों को मसलकर  
आकर उपवन में आंसू बहाने लगे हैं।

बिष-सिंचित की जड़ों को, पानी पत्तों को दी है  
देखो रिश्तों के फूल अब मुरझाने लगे हैं।

सब की शक की नजरों के दायरे में आ गए  
हम जब भी जरा कुछ गुनगुनाने लगे हैं।

सुना है धूम से मेरी निकलेगी मट्टिअत  
किल शैच्या के नीचे, काटे सिरहाने लगे हैं।

**विजय कुमार वर्मा**

प्रबंधक (रसायन)  
दायानि, बोताविके, बोकारो





## लौट आओ दीदी

बात उन दिनों की है जब आम आदमी तक टीवी-कंप्यूटर की पहुँच तो नहीं ही हुई थी, रेडियो-ट्रांजिस्टर भी अपनी पहुँच सर्व-सुलभ नहीं बना सके थे। छपरा शहर के मुख्य मार्ग पर जो गुदड़ी बाजार से साहेबगंज तक जाती है यातायात के मुख्य साधन टमटम और बैल-गाड़ी ही थे। बैल-गाड़ी तो खैर सामान ढोने के लिए ही थे। पर उसपर लटककर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने से बच्चों को भला कौन रोक सकता था। तो उन दिनों साहेबगंज में आज की भाँति इतने सारे ठेले, मोबाइल की दुकानें, सड़क पर सजी दुकानें तो नहीं ही थे, इतना भीड़-भाड़ भी नहीं था। जिला मुख्यालय होते हुए भी उसका स्वरूप एक कस्बे से ज्यादा नहीं था। फिर भी लगता है कि जब से सृष्टि बनी है तब से इस शहर का मुख्य-बाजार साहेबगंज ही रहा है। हथुआ महाराज का बसाया हुआ हथुआ-मार्केट तब भी शहर का शान था, आज भी है। एक मुख्य बात यह थी कि गेहूं पिसाने की चक्की साहेबगंज में ही थी इसलिए दहियावां-टोला तक के लोगों को भी इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए साहेबगंज ही आना पड़ता था।

आज जो कलेक्टर्स-कम्पाउण्ड में स्टेडियम और उसके चारों तरफ इतने सारे घर बने हुए हैं, तब उस सब का अस्तित्व ही नहीं था। पूरे मैदान में पेड़-पौधे एवं ऊँची-ऊँची झाड़ियों का साम्राज्य था। शाम होते ही उस रास्ते पर लोगों का चलना बंद हो जाता था और उस समय के जितने भी बुद्धिमान लोग थे उनका निश्चित मत यह था कि रात होते ही उस मैदान में भूत-प्रेतों का डेरा जम जाता था। बच्चे तो खैर दिन में भी उधर जाने से डरते थे।

इसी शहर के दहियावां मोहल्ले में एक ५-६ साल का लड़का रहता था अपने से २-३ साल बड़ी बहन के साथ वैसे तो उस घर में तीन सदस्य थे जो मोटे-ताजे अधेड़ उम्र के पुरुष प्राणी थे, उन्हें बच्चे पिताजी कह कर बुलाते थे। वे घर के नियमित सदस्य लगते नहीं थे क्योंकि हर २-४ दिनों पर वे शहर से बाहर चले जाते थे, कुछ काम धंधे के लिए।

नाम तो बताया नहीं अभी तक उस लड़के और उसकी बहन का, चलिए लड़के का नाम रोशन और लड़की का नाम दुलारी रख लेते हैं।

रोशन को दिन-भर मटरगस्ती करना और जो भी रुखा-सूखा मिल जाए उसे खाकर मस्त रहना इससे ज्यादा उसका कोई काम ना था ना ही उसकी चाह ही थी।

गरीबी और मजबूरी समय से पहले ही जीवन-निर्वाह के लिए जरूरी कार्यों को सिखा देती है, इसलिए भले ही दुलारी सिर्फ ८-९ साल की थी पर तवे पर रोटियां सेंकना सीख गयी थी। तो घर में आटा रहने पर इस बात की गारंटी रहती थी की दोनों बच्चों को भूखों पेट सोने की नौबत नहीं आएगी, वैसे मोहल्लेवाले भी कभी-कभी उन बच्चों को रोटी-सब्जी की दावत दे ही दिया करते थे।

तो गेहूं पिसाना रोशन का काम था, और रोटियां सेंकना दुलारी का और इसके लिए दोनों में से किसी को भी एक दूसरे को रिमाइंडर नहीं देना पड़ता था।



घर क्या था बस झोपड़ी से थोड़ा बेहतर, बेहतर इसलिए कि एक आँगन था उसमें पीने के पानी के लिए एक बड़ा सा घड़ा था रसोईघर में जिसमें साप्ताहिक रूप से पानी भरा जाता था। उस जमाने में शायद बेकटीरिया गणों को यह मालूम न था कि पानी प्रदूषित करने की जिम्मेवारी उनकी ही है, क्योंकि कभी यह सुना नहीं गया कि उस पानी को पीकर बच्चे कभी बीमार पड़े हो।

उनके घर में एक टूटी हुई कुर्सी भी थी, टूटी हुई विशेषण पर ज्यादा ध्यान मत दीजिये क्योंकि उसकी इज्जत कम नहीं थी। किसी विशेष अतिथि के आगमन पर उसे ही विक्रमादित्य के सिंहासन की तरह पेश किया जाता था।

घर से करीब १०० मीटर की दूरी पर एक नदी बहती थी, गंगा तो नहीं थी लेकिन उसकी जलधारा में डूबकी लगाने के पहले लोगों को 'जय गंगा' मैया 'बोलने की आदत पड़ी हुई थी। अगर उस बे-जुबान नदी में बोलने की शक्ति होती तो अवश्य बताती कि उसे नाम बदल कर जीना पसंद था कि नहीं बच्चे आचार-रोटी, गुड़-रोटी खाते ठंडा पानी पीते और दिनभर मोहल्ले के हम-उम्र बच्चों के साथ खेलते रहते। पठाई-लिखाई उन लोगों के लिए शौकिया चीज थी।

बहुत से माता-पिताओं का यह मानना था कि ज्यादा लिखने-पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं। ऐसा ही विचार उन बच्चों के पिता का भी था।

वैसे उन बच्चों ने मोहल्ले वालों से यह कहते भी सुना था कि ये बच्चे अगर उसके अपने होते तो क्या वह इन्हें स्कूल नहीं भेजता।

दशहरे की धूमधाम बीत जाने के बाद आज भी लोगों को सोनपुर मेले का इंतजार रहता है, उस जमाने में भी रहता था। रोशन और दुलारी को सोनपुर मेला देखना तो नसीब नहीं हुआ था लेकिन उसका वर्णन सुनने में भी बहुत मजा था। इतने हाथी, इतने ऊँट, घोड़ा बैल, इतनी दुकानें-बाप रे बाप, जौनपुर की नौटंकी! खुरमे और गाजे की दुकानें।

जिंदगी ऐसे ही चलती जा रही थी।

एक दिन रोशन गेंहूं पिसाने के अपने कर्तव्य का निर्वाह करने साहेबगंज जा रहा था। श्रम बचाने के लिए झोले को बैल-गाड़ी पर रखकर पीछे-पीछे चला जा रहा था तभी उसकी नजर दूर से आते हुए पिताजी पर पड़ी। पिताजी के साथ एक बड़ी लड़की, दुलारी से भी बड़ी, ये कौन आ रही है? इसे पहले कभी देखा तो नहीं।

जब वह वापस घर लौटा तो वो लड़की घर में ही एक कोने में गुमसुम खड़ी थी इतना सुंदर चेहरा होने पर भी चेहरे पर जिंदगी के कोई लक्षण नहीं! कोई खाश खुशी नहीं चेहरे पर, जबकी वह तो जानता ही नहीं था कि खुश होकर रहने के अलावे और किसी ढंग से भी जिया जा सकता है।

आँगन में प्रवेश करते ही पिताजी ने उसे बताया 'यह तुम्हारी नई दीदी है, यहीं रहेगी।' इतना कहकर पिताजी कहीं चले गए।



रोशन और दुलारी तो बहुत खुश हुए कि चलो दो से भले तीन! और यह नई दीदी काफी होशियार भी लगती है, कितने अच्छे ढंग से कपड़े पहनी है, पैरों में हवाई चप्पल भी है। वे यह सोच कर काफी खुश थे कि नयी दीदी छेर सारी कहानियां सुनाएंगी, बहुत सी नई—नई बातें बताएंगी। पर यह क्या, जब से आयी है या तो रोते रहती है या गुमसुम रहती है।

इस दीदी का नाम क्या है? कहाँ से आयी है यह दीदी? पिताजी ने कभी इसका जिक्र क्यों नहीं किया? इत्यादि बहुत सारे सवाल उसके जेहन में तैर रहे थे। वह पिताजी से नहीं पूछ सका, सोचा क्यों ना सीधे दीदी से ही पूछ लिया जाए, पर दीदी के आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

दुलारी भी दीदी को रोते देखकर उदास थी लेकिन कुछ समझने की कोशिश कर रही थी।

आखिर वह हिम्मत करके नई दीदी के पास जाकर बोला ‘बोलो ना दीदी, तुम क्यों रो रही हो? क्या भूख लगी है? तुम अभी तक कहाँ थी दीदी? नई दीदी ने सन्नेह नजरों से उसे देखा पर बोली कुछ नहीं। दुलारी दो रोटियाँ और थोड़ा सा गुड लेकर आयी, दीदी ने उसे अपने पास बैठा लिया पर स्थाई दर्द का भाव बना रहा।

रोशन और दुलारी अपने अनुभव से समझ गए कि पिताजी आज रात को घर नहीं लौटने वाले। ऐसी धूप अँधेरे में बच्चे दरवाजा खोल कर इधर-उधर ढूँढ़े ऐसा ना कभी हुआ था, ना आज जरूरत थी। कमरे के एक कोने में दीया जल रहा था बच्चों के लिए अभी यही सबसे महत्वपूर्ण बात थी। रोटी का एकाध टुकड़ा सबने निगला और बिस्तर पर लेट गए। नई दीदी को भी उसमें जगह मिल गयी। बच्चों ने फिर से दीदी से अपने बारे में बताने की जिद की, और इस बार दीदी ने मुँह खोला, मैं अपने माता-पिता के साथ सोनपुर मेला देखने आयी थी, मेले में एक हाथी के सनक जाने के कारण भगदड़ मच गयी। मैं अपने माता-पिता से बिछड़ गयी। लाखों लोगों के भीड़ में मैंने बहुत खोजा उन लोगों को लेकिन उन लोगों का पता नहीं चल सका। मेरे पिताजी के उम्र के एक आदमी ने मुझे आश्रय देने के लिए अपने घर चलने को कहा। आखिर रात तो कहीं काटनी थी सो मैं उनके साथ चल दी। लेकिन उन्होंने तुम्हारे पिताजी से पैसा लेकर मुझे बेच दिया। दूसरे दिन तुम्हारे पिताजी डरा धमका कर मुझे यहाँ ले आये। आज यहाँ आते समय तुम्हारे पिताजी ने रास्ते में ही एक और आदमी के हाथों बेचने के लिए मेरा सौदा पक्का कर लिया। कल दोपहर को वह आएगा और तुम्हारे पिताजी को पैसा देकर मुझे ले जाएगा।

रोशन बोल उठा, ‘नहीं दीदी हम आपको कहीं नहीं जाने देंगे। दीदी आप हम लोगों को छोड़ कर कहीं नहीं जाइएगा। हमलोग उस आदमी को मार कर भगा देंगे। नई दीदी उसकी बात पर फीकी हँसी हँसकर रह गयी।

सुबह उठकर रोशन झाड़ियों की तरफ खेलने चला गया। एकाध घंटे बाद लौटा। उसके हाथों में पत्थर थे, ईंट का टुकड़ा था और एक डीबिया भी थी।

९ बजते-बजते वह नया खरीदार आ धमका। वह आदमी बेतकल्लुफी से कुर्सी पर बैठ गया और अजीब-अजीब नजरों से दीदी को घूरने लगा।

रोशन उठा, डीबिया खोला और उसे उस आदमी के बंडी के अंदर पीठ के तरफ उलट दिया। वह आदमी दर्द से बिलबिलाने लगा। समझ नहीं सका कि आखिर हुआ क्या, तभी रोशन ताली बजा-बजा कर हँसने लगा



और कहने लगा 'और ले जाओ मेरी दीदी को, बिछू काट रहा है तब कैसा मजा आ रहा है।

वह आदमी बंडी उतारते हुए उठकर भगा वहाँ से पर जाते—जाते धमका गया 'छोड़ूंगा नहीं तुझे, पैसा खर्च किया है। देखता हूँ कब तक बचती है और कहाँ तक भागती हैं'।

रोशन अपनी जीत पर खुश होकर फिर दोस्तों के साथ खेलने चला गया, शायद अपनी बहादुरी के किससे सुनाने।

दुलारी भी तुरंत कोई विपदा नहीं देखकर रसोईघर के कामों में व्यस्त हो गयी।

खेलते—खेलते जब रोशन को भूख—प्यास लगी तब वह घर की ओर दौड़ा। घर पर आकार उसने सबसे पहले नयी दीदी को ढूँढ़ा। कहीं अता—पता नहीं चला। दुलारी से पूछा, दोनों मिलकर खोजने लगे, पर पता नहीं चला, दोनों का मन घबराने लगा घर से बाहर खोजा, चारों तरफ खोजा, कहीं पता नहीं चला।

जब वह बहुत उदास होता था तो नदी के किनारे जाकर बैठ जाता था, घंटों एकांत में। आज भी वह नदी के किनारे की तरफ चल दिया। नदी के तट जाते ही उसे दिखाई दिया कि दीदी नदी के अन्दर की तरफ बढ़ते जा रही है। वह पूरा जोर लगाकर चिल्लाया 'दीदी! आगे मत बढ़ो दीदी! लौट आओ! लौट आओ दीदी! दीदी...दीदी.....

लेकिन दीदी तो जैसे सुन ही नहीं रही थी। एकबार मुड़कर भी नहीं देखा दीदी ने। वह चिल्लाता रहा पर दीदी बढ़ती रही। धीरे—धीरे कमर तक फिर कंधे तक और फिर गर्दन तक पानी में दूब गयी। फिर अहिस्ता—अहिस्ता नजरों से ओझाल हो गयी। वह वहीं पर बैठ कर बुक्का—फाड़ कर रोता रहा।



विजय कुमार वर्मा  
प्रबंधक (रसायन)  
दायानि, बोताविके, बोकारो





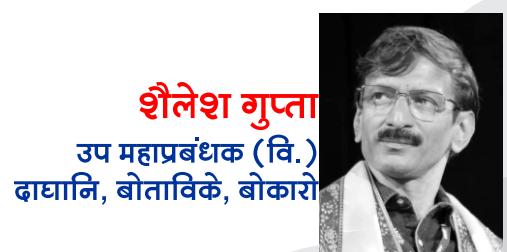
संस्कृति



## सच या झूठ : जीत किसकी?

इन दिनों मुझे  
कोई सच... सच नहीं लगता  
न कोई झूठ... झूठ  
 मुझे हर सच को देख के लगता है  
 कि इसमें कहीं किसी झूठ की  
 मिलावट तो नहीं  
 और, किसी झूठ को चमकते दमकते  
 देखता हूँ  
 तो उसे बड़े गौर से देखने की  
 कोशिश करता हूँ  
 कहीं इसने किसी सच के गले पे  
 पांव तो नहीं रखा हुआ है  
 कोई अभागा निर्बल सच  
 इसके पांव के नीचे दम तो  
 नहीं तोड़ रहा है  
 दर असल मैं  
 शक्की दिमाग का होता जा रहा हूँ  
 किसी पर कोई ऐतबार ही नहीं होता  
 किसी को क्या कहूँ?  
 मुझे तो खुद पर भी अपने भरोसा  
 नहीं रह गया है  
 जाने किधर की हवा मुझे  
 फटे अखबार की तरह उड़ा ले जाए  
 किसी कचरे में गिरा आए  
 मुझे तो ‘‘सत्यमेव जयते’’ भी  
 कोई चुनावी जुमला सा लगने लगा है

आजकल सच कहां जीता है?  
 जीता तो वो है  
 जिसे जीतने की तरकीब आती है  
 जो सच को झूठ और  
 झूठ को सच में बदलने की  
 कला में निपुण हो।  
 इसीलिए मुझे जीतने वालों से नहीं  
 हारने वालों से ही रही है हमदर्दी।  
 बेचारे किसी घिसे पिटे पुराने सच को  
 पकड़े पकड़े जिंदगी गुजार देते हैं।  
 और, जिंदगी में अपने पुराने किसी  
 विश्वासी सच की वजह से हमेशा  
 हार जाते हैं।



श्रीलेश गुप्ता

उप महाप्रबंधक (वि.)  
दाधानि, बोताविके, बोकारो



## गज़्ल

शायर हूं, इश्क की ही इबादत करुंगा मैं,  
 बस यार की गली की जियारत करुंगा मैं ,  
 वैसे तो कुछ नहीं हूं ये मालूम है मगर ,  
 अपने जमीर की तो हिफाजत करुंगा मैं,  
 कायर नहीं हूं जुल्म के आगे झुका दूं सर ,  
 जितना भी कर सकूंगा बगावत करुंगा मैं ,  
 सूदो जियां की बात जमाने सिखा न तू ,  
 खुद को लुटा दूं ऐसी तिजारत करुंगा मैं ,  
 रब से यही दुआ है मुझे नफरतें न दे ,  
 सबको गले लगा के रफाकत करुंगा मैं ,  
 गजलों में हुस्न उनका बयां खुल के करुंगा ,  
 इतनी तो जिंदगी में शरारत करुंगा मैं ,  
 सजदे में रुह होगी ख़्यालों में पा उन्हें ,  
 आएंगे जब वो याद बशारत करुंगा मैं ,

जियारत-तीर्थ यात्रा, धार्मिक स्थल का भ्रमण, सूदो  
 जियां-लाभ हानि, तिजारत-व्यापार, रफाकत-मेल  
 जोल, मित्रता, बशारत-शुभ सूचना, खुशखबरी  
 ख़्वाब, कच्ची नींद की अवस्था में कुछ सोचना या  
 ध्यान की मुद्रा में होना, इल्हाम या वही के द्वारा गैबी  
 हिदायत या इशारा इत्यादि !

**शैलेश गुप्ता**

उप महाप्रबंधक (वि.)  
 ढाघानि, बोताविके, बोकारो



## सभ्यता बनाम सिकुड़ते वन

आज धरा के आँचल से  
 कुछ छिन गया सा दिखता है।  
 कहाँ गई वो हरियाली और छाँव  
 सब कुछ बिखरा-बिखरा दिखता है।  
 फल-औषधि और अनगिनत उपहारों के बदले में,  
 हमने लौटाया है दुनिया को  
 दरकते पहाड़, सिमटते कटते वन  
 और लरजती नदियाँ।  
 याद है महामारी का वह दौर  
 जब जीने की थी भारी होड़।  
 तब कितनी विपदा आई थी,  
 सांसें कम होने को आई थी।  
 सभ्यता की कीमत यही है  
 तो हम भूल गए हैं एहसान उनके  
 सिकुड़ते-सिमटते वन  
 जो हैं पालनहार सबके।  
 पर अब धरा को बचाना है चिपको आंदोलन  
 कोअपनाकर पेड़ों का अस्तित्व बचाना है।  
 प्रण लें आज सब मिलकर प्रकृति के संतुलन को  
 पेड़ लगाकर पुनः बनाना ह।

**छाया कुमारी**

शिक्षिका  
 ढाघानि+2 उच्च विद्यालय  
 बोकारो थर्मल





## दाँतों को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक सलाह

दाँत के बिना जीवन बेस्वाद है। अधिकतर लोग यही मानते हैं कि दाँत जीवन भर नहीं रहते और बुढ़ापे में निकल जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। किंतु बात ऐसी नहीं है सही देखभाल खान-पान और चिकित्सा परामर्श से दाँतों को पूरे जीवन स्वस्थ रखा जा सकता है।

दाँतों की समुचित देखभाल के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण तरीके आवश्यक हैं।

1. **दाँतों की सफाई :** दाँतों के लंबे समय तक अस्तित्व में बने रहने के लिए सबसे आवश्यक है सही सफाई। दिन में काम से कम दो बार नियमित रूप से ब्रश करना आवश्यक है। फ्लोराइड वाली टूथपेस्ट से न सिर्फ दाँत मजबूत होते हैं बल्कि लंबे वक्त तक कीटाणुओं से मुक्त रहा जा सकता है। दंत चिकित्सकों का मानना है कि ब्रश के उपरांत फ्लॉस करना अति आवश्यक है। वैसे लोग जिनके दाँतों के बीच अंतर होता है उन्हें फ्लैश अवश्य करना चाहिए। ब्रश करने के दौरान दाँतों के बीच ब्रश के सही तरह से नहीं पहुंचने के कारण कीटाणुओं के संक्रमण होने की ज्यादा संभावना बनी रहती है। इसलिए सही तरीके से ब्रश करना आवश्यक है। कुछ भी खाने के बाद कुल्ला आवश्य कर लेना चाहिए। इस बात का मुख्य रूप से ध्यान होना चाहिए कि भोजन के अंश दाँत में फंसा ना रहे।
2. **अधिक ठंडी या गर्म खाद्य पदार्थों से परहेज :** अत्यधिक ठंडा या गर्म खाद्य पदार्थों के सेवन से दाँतों को बचाना आवश्यक है। लंबे समय तक ऐसा करने से दाँतों की ऊपरी परत क्षतिग्रस्त हो जाती है और दाँत सेंसिटिव हो जाते हैं। दाँतों में

तेज दर्द की 30 उठाती है ज्यादा ठंडी या गर्म वस्तुएं मुंह और गले में छाले पड़ने का कारण भी बन सकते हैं।

3. **सही खान पान :** स्वस्थ आहार ही स्वस्थ दाँत की बुनियाद है। उचित खानपान से दाँत की उम्र बढ़ जाते हैं। फाइबर युक्त कच्ची सब्जियां खाने से दाँतों की कसरत होती है। दाँतों में चिपके हुए कण आसानी से निकल जाते हैं। गाजर, मूली, शलजम, पत्तेदार सब्जियां आदि दाँतों के स्वास्थ के लिए आवश्यक है। दूध, दही, पनीर, हरी सब्जियां जैसे कैल्शियम युक्त खाद्य पदार्थों के सेवन से दाँत मजबूत होते हैं। प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ जैसे दही, पनीर, अंकुरित अनाज, सोयाबीन आदि दाँतों के लिए फायदेमंद है। अंडे, चिकन, मटन या मछली आदि मांसाहारी लोगों के लिए प्रोटीन की बेहतर उपलब्धता है। लेकिन चीनी, गुड़, शक्कर, मिश्री, मिठाई, केक, पेस्ट्री, चॉकलेट, सॉफ्ट ड्रिंक आदि दाँतों के लिए हानिकारक हैं। ऐसे खाद्य पदार्थों के सेवन के बाद दाँतों को साफ करना नितांत आवश्यक है। ऐसे पदार्थ का कम सेवन दाँतों के स्वास्थ के लिए बेहतर होता है।
4. **पर्याप्त पानी का सेवन :** पानी की कमी के कारण दाँत कमजोर होने लगते हैं। पर्याप्त पानी पीने से मुंह में पर्याप्त लार बनती है। इस कारण दाँतों को नुकसान पहुंचाने वाले बैक्टीरिया की संख्या कम हो जाती है और मुंह के अंदर पीएच वैल्न्यू सही बनी रहती है। अतः पर्याप्त मात्रा में पानी पीना जरूरी है।



संस्कृति



5. चिकित्सीय परामर्श : दाँतों का चिकित्सीय परामर्श लंबे समय तक अस्तित्व में बने रहने के लिए परम आवश्यक है दृत चिकित्सक से नियमित परामर्श से दाँतों एवं मुँह में होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है। वर्ष में दो बार दृत चिकित्सक से मिलकर पूरा चेकअप कराना चाहिए।



**डॉ. निशा कुमारी**  
बी.डी.एस. (प्रशिक्षु)  
पुत्री : श्री ढीनानाथ शर्मा  
सहायक नियंत्रक (या.)



## हम हैं हिंदी भाषी

हम हैं भारतवासी !  
 हम हैं हिंदी भाषी !  
 सभी भाषाओं का, सभी धर्मों का,  
 यहाँ होता है सम्मान,  
 मेरा भारत देश महान !  
 बंगाली, पंजाबी, गुजराती या हो मद्रसी  
 सबसे पहले हम हैं भारतवासी !  
 हम हैं हिंदी भाषी !  
 हिंदी हमारी जान है,  
 हम भारतीयों की पहचान है !  
 क्यों हम हिंदी से शर्माते हैं ,  
 अपनी राष्ट्रभाषा को भूल जाते हैं!  
 आगे आए, सब मिलकर सप्त लें  
 हिंदी में हम करें काम!  
 जिससे हो भारत का नाम!



**आनंद प्रकाश मेहता**  
अवकाश प्राप्ति डिप्टी मैनेजर (या.)  
ईंधन प्रबंधन, ढाघानि, बोताविके  
बोकारो (झारखण्ड)





## मैं और मेरी कला यात्रा...

आज भाग दोड़ की की जिंदगी में कभी-कभी हम अपने बच्चों के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं उसके उनके अंदर की छुपी हुई प्रतिभा को, उनकी इच्छाओं को दफन कर देते हैं। अगर मां-बाप अपने हिस्से का कुछ समय अपने बच्चों के साथ बिताने का अवसर दे तो यह उनके जीवन का अनुपम भेंट की तरह होता है और फिर कलाध आर्ट को तो मानव की कल्पना का सर्वोच्च फल माना गया है। पेंटिंग में संवेदना-सौंदर्य लौकीक-अलौकिक, चेतन-अचेतन, भौतिक या यूँ कहें सब कुछ समेट लेने की क्षमता होती है। आज हमारा देश विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है जिसमें दूषित पर्यावरण भी एक चिंता का बिषय है। कला के माध्यम से लोगों में जागरूकता पैदा की जा सकती है। जैसे कि पीस पोस्टर, पर्यावरण की रक्षा संबंधित पोस्टर, सुरक्षा संबंधित पोस्टर आदि।

एक समय था जब हमारे अभिभावकों की सोच थी की कला से जीविका या रोजगार नहीं मिल सकती। कला के प्रति मेरी जीवन यात्रा स्कूल के समय से शुरू हो गई थी। कला के प्रति झुकाव रहने के बावजूद भी मैं आर्ट कॉलेज में दाखिला नहीं ले पाया। मैंने बीएन कॉलेज पटना से साइंस में प्रतिष्ठा के साथ पास किया पर मेरा लगाओ कला के प्रति बना रहा और अपने मित्रों के साथ मिलकर मैं कुछ कुछ काम करता रहा। पटना आर्ट एंड क्राफ्ट कॉलेज में जाता रहा। इसी बीच मुझे डीवीसी में सहायक परिचालक के रूप में सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। 1984 नवंबर से 2023 दिसंबर तक मैं डीवीसी बोकारो थर्मल में कार्यरत रहा। कला संबंधित डीवीसी के सारे कार्यक्रमों में मेरी सक्रियता रहती थी। यहां आने के बाद मैंने कॉरेस्पोंडेंस कोर्स के द्वारा कला से डिग्री हासिल की। डीवीसी जैसे

संस्थान में आने के बाद मुझे इज्जत शोहरत और पैसा मिला। डीवीसी में एक अधिकारी के साथ-साथ वरिष्ठ चित्रकार के रूप में मुझे देश-विदेश में अपनी कला को प्रदर्शित करने एवं कार्यशाला में भाग लेने का मौका मिला। मैं विदेश यात्रा में भूटान, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर एवं बांग्लादेश गया। 26 जनवरी एवं 15 अगस्त के मौके पर डीवीसी के द्वारा झांकी प्रस्तुत करने का योगदान रहा। आज के समय कला की महत्ता जग जाहिर है। कला को लोग अपना करियर चुन रहे हैं। बैचलर आफ फाइन आर्ट्स की डिग्री के लिए बहुत सारे कॉलेज खुल गये हैं। ग्रेजुएशन की डिग्री सिर्फ इंजीनियरिंग तक ही सीमित नहीं रह गई है, अब आप बैचलर ऑफ डिजाइन भी कर सकते हैं। इसके लिए एक से बढ़कर एक गवर्नमेंट और प्राइवेट कॉलेज उपलब्ध है। जैसे एनआईडी, एनआईएफटी, आईआईटी इत्यादि कॉलेज जिसमें आप ग्रेजुएशन अथवा पोस्ट ग्रेजुएशन भी कर सकते हैं। एक से बढ़कर एक कंपनी में नौकरी पा सकते हैं। आज अभिभावक भी अपने बच्चों को आर्ट एंड डिजाइन को अपना करियर चुनने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। अंत में मैं बस यही कहना चाहूंगा की दुनिया एक कैनवस है, आप अपने सोंच से, महनत से जैसा रंग चाहे भर सकते हैं।

### आनंद प्रकाश मेहता

अवकाश प्राप्त डिप्टी मैनेजर (यां.)  
ईंधन प्रबंधन, ढाघानि, बोताविके  
बोकारो (झारखण्ड)





## तू मुस्कुराना सीख

तेरे नसीब में जो है

वह तुझे मिलेगा

यह सोचकर तू मुस्कुरा।

तुझे जो नहीं मिला

शायद वो तेरा नहीं

यह सोच कर तू मुस्कुरा।

तू अनमोल है

जिसने तेरी कदर नहीं की

वह नादान है

यह सोचकर तू मुस्कुरा।

जानता हूँ नसीब में नहीं है वो

उसकी याद सीने में रखकर

तू मुस्कुरा।

क्षण-क्षण टूट रहे सपने

पग पग गिर रहा है तू

उठ, बुन सपने

फिर मुस्कुरा.....

असफलता से ना घबरा

परीक्षा की घड़ी है तेरी

आंसू सोख कर आंखों में

तू पंख फैला, आसमां छू

तू हंस, तू मुस्कुरा।

क्योंकि मुस्कुराना आदत है तेरी

मुस्कुराना जिंदगी है तेरी।

## पेड़ लगाओ जीवन बचाओ

पेड़ लगाओ जीवन बचाओ

यह जीवन का वरदान अब

पेड़ कटेगा जीवन घटेगा

इसे तो पहचान अब ॥

पेड़ हरी-भरी हरियाली हो

तभी तो जीवन में प्रसन्नता और खुशहाली हो।

पेड़ बेचारा चुप-चुप रोता

क्यों काटने इंसान आता

मैंने तो ख्वाहिश मानव की

की पूरी सारी.....

फिर भी उसे मुझपर तरस ना आई।

एक-एक भाग मेरा काट डाला

मुझ को नंगा कर रख डाला

अलग कर डाले मेरे डाल- छाल

दूर कर दिए मेरे फूल -फाल

अभी, ठहर जा तू इंसान

वरना भोगेंगे तेरे संतान

सुख पाने की तत्परता में

अपने सुख को ना खो देना

अभी समय है प्राण बचाओ

अधिक से अधिक तुम पेड़ लगाओ.....

धरती की तुम शान बढ़ाओ

जीवन में मुस्कान तुम लाओ।।

**प्रतिमा ठाकुर**

शिक्षिका (पीजीटी हिंदी)  
कार्मेल विद्यालय, बोकारो थर्मल





## स्वच्छता ही जीवन है

धरातल पर पदार्पण के साथ ही अवशिष्ट/अपशिष्ट पदार्थ का उत्सर्जन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। अपशिष्ट पदार्थ का सही समय पर उचित माध्यम से निपटान करना एक परम आवश्यक कार्य है, तभी हमारा तन-मन पर्यावरण स्वच्छ और स्वस्थ बना रहेगा। हमारे आस-पास के समष्टीय व्यवस्था को पर्यावरण कहा जाता है। विशुद्ध पर्यावरण का संबंध जल, स्थल और वायुमंडलीय वातावरण से है।

विकास को चरम पर परवान चढ़ाने के क्रम में औद्योगिक प्रगति को पंख लग चुका है। विज्ञान में क्रिया और प्रतिक्रिया का गहरा नाता है। उद्योगों से निकलने वाले कचरे हमारे स्थल-वातावरण को प्रदूषित करते हैं। इनका उचित निपटान न किया जाए तो बहुत ही खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। इसी प्रकार सतहीं तौर पर हमारे घरों, कार्यालयों, दुकानों, सड़कों, पार्कों इत्यादि जगहों से निकलने वाले कचड़े जब सही कूड़ेदान में नहीं डाले जाते हैं, तो यहीं कचड़े सड़कों, नालियों या सार्वजनिक स्थानों पर बिखरकर बदबू और दुर्गंध फैलाते हैं और वहाँ से गुजरने वाले व्यक्ति ना चाह कर भी अपने नाक पर रुमाल रखना नहीं भूलते।

कचरा-प्रबंधन पर चर्चा जन-साधारण से लेकर खासम-खास स्तर के समाज में होनी चाहिए। निम्नवत बिंदु महत्वपूर्ण हो सकते हैं :-

1. कचरा उत्सर्जन के स्रोत के आधार पर कूड़ेदान का निर्माण किया जाए। जैसे-औद्योगिक अपव्यय कूड़ेदान, गली/कॉलोनी कूड़ेदान, अस्पताल कूड़ेदान, बाजार कूड़ेदान, घरेलू कूड़ेदान इत्यादि
2. जिस प्रकार घर में संग्रहि कचरे का प्रतिदिन निपटान किया जाता है उसी प्रकार बाकी कूड़ेदानों को भी एक नियमित अंतराल पर सफाई आवश्यक है।
3. अस्पताल कूड़ेदान को कई श्रेणियों जैसे-प्लास्टिक बोतल व प्लास्टिक सर्जिकल सामानों के लिए कचरे का डिब्बा, काँच से बने बोतल/सिरिंज इत्यादि के लिए अलग कूड़ेदान, मरहम-पट्टी या सर्जिकल अपव्यय के लिए अलग कूड़ेदान आदि।
4. कचरे के डिब्बे को हमेशा बंद रखा जाए, क्योंकि उससे निकालने वाले दुर्गंध या संक्रमण आस-पास के वातावरण को दूषित करते हैं।

अंत स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए जन जागृति।

**आशुतोष कुमार**

**बी.टेक (प्रथम वर्ष)**

**के.आई.आई.टी., भुवनेश्वर**

**पुत्र-दीनानाथ शर्मा**

**सहायक नियंत्रक (यां.)**





**संस्कृति**



## ईंधन प्रबंधन : एक नज़र

भारत में, 60% ऊर्जा की मांग को (Fossil Coal) जीवाशम कोयला आधारित थर्मल पावर प्लाट्ट्स (टीपीपी) द्वारा पूरा किया जाता है। डीवीसी (डीवीसी) की कुल स्थापित क्षमता 6701 मेगावाट है, जिसमें 6540 मेगावाट बिजली इसके कोयला आधारित थर्मल पावर प्लाट्ट्स से उत्पन्न की जाती है, जबकि अन्य 147.2 मेगावाट हाइडल और 13.82 मेगावाट सौर ऊर्जा से आती है। डीवीसी कोयला सीआईएल (केंद्रीय कोयला खनन लिमिटेड) की सहायक कंपनियों जैसे कि सीसीएल, बीसीसीएल, एमसीएल और ईसीएल से वाणिज्यिक रूप से लागू ईंधन आपूर्ति समझौते (एफएसए) के माध्यम से प्राप्त करता है। खदानों में उत्पादित कोयले को आकार दिया जाता है और गुणवत्ता की पुष्टि के बाद इसे विभिन्न तरीकों से, विशेषकर सड़क या रेलवे रेक के माध्यम से डीवीसी संयंत्रों में भेजा जाता है। भारतीय रेलवे डीवीसी संयंत्रों के लिए एकमात्र परिवहनकर्ता है। रेक्स के डीवीसी संयंत्रों में आगमन पर, उन्हें ट्रैक होपर या वैगन ट्रिपलर में उतारा जाता है, जहाँ उन्हें आगे के भंडारण और बंकरों में परिवहन के लिए रखा जाता है, ताकि इसका उपयोग बॉयलर में जलाने के लिए किया जा सके। बॉयलर में, गर्मी के परिवर्तन पर काम करने वाला तरल ऊष्मा ऊर्जा प्राप्त करता है, जिसका उपयोग टरबाइन में यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तन के लिए किया जाता है। टरबाइन को जनरेटर से जोड़ा जाता है, जो घूर्णनशील यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करता है।

बोकारो ताप विद्युत केंद्र में (Mural Painting) भित्तिचित्र द्वारा, जो आनंद प्रकाश मेहता एवम मृत्युंजय प्रसाद द्वारा बनाया गया है, दिखाया गया है।



Mural Painting By :  
Artist : Mrityunjay Prasad & Anand. Prakash Mehta

**मृत्युंजय प्रसाद**

डिप्टी जेनरल मैनेजर  
हेड ऑफिस, कोलकाता





**संस्कृति**



## लक्ष्य प्राप्ति हेतु समूह मीटिंग का हिस्सा बनना

टीम मीटिंग एक कॉमन लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए सीखने, साझा करने और सहयोग करने का मौका प्रदान करती है। अक्सर, हम मीटिंग में अपना अहंकार और अधीरता लेकर आ जाते हैं। इससे एक जनरल कम्यूनिकेशन बहस में बदल जाता है। आइए इससे संबंधित कुछ विशेष बातों को समझें:

टीम मीटिंग में हमें कुछ नया साझा करने और सीखने का अवसर मिलता है जिसे आप अपने काम या व्यक्तिगत जीवन में लागू कर सकते हैं। और साथ ही यह लोगों से सार्थक रूप से जुड़ने का भी समय है।

जिस दिन आपकी मीटिंग हो, उस दिन उससे संबंधित योग्य कार्यों की सूची पर अमल करते हुए, अपने अंदर की तैयारी के लिए मेडिटेशन का अभ्यास करें कि, मीटिंग में आपके मन की स्थिति कैसी होनी चाहिए। अपनी टीम के साथ मीटिंग को पहले से ही विजुलाइज करें, कि आप धैर्यतापूर्वक सुन रहे हैं, सम्मानपूर्वक अपने विचार रख रहे हैं, हमेशा सही बातों के लिए स्टैंड ले रहे हैं और साथ ही दूसरों को सही दिशा में सोचने के लिए सशक्त बना रहे हैं।

किसी मीटिंग में लोगों को स्वीकार करने का मतलब यह नहीं है कि, आप किसी को कुछ भी करने की इजाजत दें। इसका सीधा सा मतलब है कि, आप अपनी वैल्यूज पर कायम रहते हुए और बिना परेशान हुए अपने प्योर इंटेंशन को रेडिएट करें। इस तरह से आपका सही एटीट्यूड दूसरों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगा।

किसी मीटिंग के दौरान आपके पास सबसे अच्छा आइडिया हो सकता है लेकिन दूसरों की बात सुनते समय अपने आइडिया के बारे में न सोचें, जरूरत पड़ने पर अपनी राय बदलने के लिए भी तैयार रहें। क्योंकि हमारे इंटेंशन केवल मीटिंग के उद्देश्य को लाभ पहुंचाने के लिए होने चाहिए। हमारे इंटेंशन कभी भी लोगों को प्रभावित करने या खुश करने के नहीं होने चाहिए। और साथ ही, अपने आइडियाज पर संदेह न करें जब दूसरे इसे अस्वीकार करते हैं।



**नग्रता शर्मा**

एम.बी.ए. (मा.सं.)

पुत्री : श्री ढीनानाथ शर्मा  
सहायक नियंत्रक (यां.)





## कृत्रिम बुद्धि और डिजीटाईजेशन

किसी विषय के क्रमागत और सुसंगठित ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। इस विज्ञान के विकास यात्रा में दो ऐसे पड़ाव दृष्टिगोचर होते हैं जहाँ से विज्ञान न केवल पल्लवित व पुष्टि हुआ अपितु संपूर्ण समष्टि फलीभूत भी हुई। पहला पड़ाव है—आग की खोज जबकि दूसरा पड़ाव है—कंप्यूटर का आविष्कार। एक और जहाँ आग की खोज ने हमें अमनुष्य से मनुष्य बना दिया जबकि दूसरी ओर कंप्यूटर के आविष्कार में मानव मस्तिष्क के समानांतर तेजी से काम करने वाला मशीन बनाया। ठीक इसी प्रकार की तीसरी क्रांति नजर आ रही है—विज्ञान के विकास में कृत्रिम बुद्धि की परिकल्पना से।

“कृत्रिम बुद्धि” का शाब्दिक अर्थ है—बनावटी तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। अतः कृत्रिम बुद्धि कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जिसमें मशीनों और सॉफ्टवेयर के बुद्धि के साथ विकसित की गई है। इस तकनीकी के आधार पर ही कंप्यूटर आधारित रोबोटिक पद्धति तैयार किया जाता है। कृत्रिम बुद्धि तकनीक कंप्यूटरों को मनुष्य जैसे सोचने, सीखने, पैटर्न पहचान करने, प्राकृतिक भाषा को समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने का प्रयास करती है।

कृत्रिम बुद्धि की परिकल्पना सन् 1955 में जॉन मैकार्थी ने विकसित की, जिसमें विज्ञान और इंजीनियरिंग के बुद्धिमान मशीनों को बनाने में सहायता मिली। ‘रोबोट’ शब्द का इस्तेमाल सर्वप्रथम सन् 1921 में चेक लेखक ‘कारेल कापेक’ ने अपने नाटक आर.यू.आर. (रोसोम्स यूनिवर्सल रोबोट्स) में किया। रोबोट शब्द रोबोटा (कार्य) शब्द से आया है। सन् 1958 में जॉन मैकार्थी ने प्रोग्रामिंग भाषा ‘लिस्प’ का विकास किया जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान में उपयोग की जाने वाली सबसे लोकप्रिय प्रोग्रामिंग भाषा बन गई।

डिजिटाईजेशन को हिंदी में अंकरूपण कहा जाता है। किसी भी डाटा या सूचना को अंक रूप में प्रतिरूपित करना ही अंकरूपण है। वास्तव में हमारी जानकारियों को कंप्यूटर को पढ़ने योग्य बनाने के लिए डिजिटाईजेशन जरूरी है क्योंकि कंप्यूटर द्विआधारित पद्धति (0, 1) पर काम करता है। एनालॉग पद्धति में लिखी सूचनाओं को कंप्यूटर नहीं पढ़ सकता जबकि मानव मस्तिष्क आसानी से पढ़ लेता है। इस प्रकार मानव मस्तिष्क एनालॉग पद्धति पर काम करता है जबकि कंप्यूटर मस्तिष्क डिजिटल पद्धति पर। कृत्रिम बुद्धि और डिजिटाईजेशन अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कंप्यूटर केवल सूचनाओं आदि के डिजिटल प्रारूप को पढ़कर और दिए गए निर्देशों के आधार पर कार्य करता है। कागजी दस्तावेज (Hard Copy) का डिजिटल दस्तावेज (Soft Copy) में स्थानांतरित करना डिजिटाईजेशन का एक उदाहरण है।

कृत्रिम बुद्धि तकनीक कई क्षेत्रों में लागू हो रही है जिससे जनसामान्य को काफी फायदा पहुँच रहा है। स्वास्थ्य सेवा, परिवहन सेवा, वित्तीय सेवाएँ, मनोरंजन और मानव जीवन के कई पहलुओं में यह तकनीक महत्वपूर्ण सुधार की संभावना रखता है। शैक्षणिक क्षेत्र, सतर्कता जागरूकता क्षेत्र, खगोलीय अन्वेषण आदि में यह तकनीकी बहुत कारगर सिद्ध हो रही है। कृत्रिम बुद्धि और डिजिटाईजेशन के अनुप्रयोग से बने विभिन्न यंत्रों/परियोजनाओं को बड़ी आसानी से समझा जा सकता है।



1. रोबोट – यह कंप्यूटरीकृत मस्तिष्क वाला मानव निर्मित मशीन है जो मनुष्य की तरह स्थिति-परिस्थिति के अनुसार अपने कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के साथ कार्य करता है। कोविड-19 महामारी में रोबोट विकसित देशों में काफी कारगर हुआ। संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने पर संक्रमित होने का खतरा बहुत था। रोबोट ने रोगियों की देखभाल अपने कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से ऐसे किया जैसे कि एक सामान्य इंसान। चिकित्सा के क्षेत्र में रोबोट का उपयोग आने वाले विपरीत परिस्थितियों में मील का पत्थर साबित हो सकता है। वास्तव में संगणना, संचार, जैविक प्रायोगिकियाँ, मस्तिष्क स्कैनिंग, मानव मस्तिष्क का ज्ञान और सामान्य रूप से मानव ज्ञान भी सभी ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। अधिक महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर, अंतर्राष्ट्रीय, आंशिक रूप से मानव मस्तिष्क की रिवर्स-इंजीनियरिंग से प्राप्त की जाएगी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आने वाला समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता का होगा।
2. चंद्रयान-3 : हाल-फिलहाल चंद्र-मिशन में प्रक्षेपित चंद्रयान-3 में वैज्ञानिकों ने कृत्रिम बुद्धि का भरपूर उपयोग किया है। चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव सदैव स्थिति के प्रतिकूल माना जाता है। दक्षिणी ध्रुव पर बेहद जटिल परिस्थितियों में चंद्रयान-3 के सुगम अवतरण का उदाहरण कृत्रिम बुद्धि के सबसे सफल एवं ताजा उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। पहले प्रयास में सुगम अवतरण (Soft Landing) के समय चंद्रमा की सतह पर बड़ा गड्ढा मिलने पर ‘विक्रम’ लैंडर ने अपनी लैंडिंग पोजीशन को बदला। यह लैंडर के कृत्रिम बुद्धि का ही परिणाम है। दूसरी कोशिश में जब चंद्रमा की सतह पर समतल पाया गया और विक्रम ने यह निर्णय लिया कि इस बार सुगम अवतरण हो सकता है तब बड़ी ही सावधानी पूर्वक चंद्रयान-3 का सफल और सुगम अवतरण हो सका। रोवर ‘प्रज्ञान’ ने भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए अनेक महत्वपूर्ण जानकारियों को डिजिटाईजेशन के माध्यम से ‘इसरो’ को दी, मानों कोई जीव स्थिति-परिस्थिति के अनुसार अपने को ढालते हुए काम कर रहा है और अपनी संरक्षा का भरपूर रखाल रख रहा है।

वित्तीय मामलों, जैसे बैंक आदि में धोखाधड़ी का संभावनाएँ सदा बनी रहती है। डेटा के संरक्षण संबंधी मामलों में साइबर अपराधी प्रायः सेंध लगाने की फिराक में रहते हैं। मोबाइल के माध्यम से फर्जी संदेश, ई-मेल लिंक आदि से ठगी की बातें आम होती रहती हैं। ऐसे जोखिम भरे लेन-देन के मामलों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता काफी लगाम लगती है। प्रोग्रामिंग में दिए निर्देशों के आधार पर कृत्रिम बुद्धि कंप्यूटर आसानी से धोखे वाले कॉल, संदेश, ई-मेल अथवा लिंक को पकड़ लेते हैं जिससे ग्राहक नुकसान से बच जाते हैं।

रक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धि अत्यंत कारगर है। तकनीकी के जमाने में अब युद्ध केवल जवानों के बल पर नहीं जीते जा सकते। ऐसे-ऐसे रक्षा संयंत्र अब बन रहे हैं जहाँ कृत्रिम बुद्धि से युक्त युद्ध के सामान बन रहे हैं। अचूक निशाने, दुश्मन की सीमा का स्पष्ट आंकलन की प्रोग्रामिंग से परिपूर्ण अस्त्र-शस्त्र सफलता की गारंटी बन गए हैं।



संस्कृति



कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धि की अपार संभावनाएँ हैं। फसलों के लिए उपयुक्त मौसम का पूर्वानुमान, खेती के नए-नए तरीके, अनाजों के भंडारण आदि में आने वाली समस्याओं के डेटा के डिजिटाईजेशन से कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित कर खाद्यान्न संकट से निजात पाया जा सकता है। परिवहन के क्षेत्र में चालकरहित गाड़ियों के निर्माण से आंखों को भरोसा ही नहीं होता। यातायात के नियमों एवं निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए की कृत्रिम बुद्धि से परिपूर्ण इंजन अबाध रूप से सड़कों पर फराटेदार सवारी करती है।

कंप्यूटर के इस युग में कृत्रिम बुद्धि की परिकल्पना से ऐसा जान पड़ता है मानो आने वाले दिनों में सारी सेवाएँ मानवरहित भी उपलब्ध हो सकेंगी। अगर यह कहा जाए कि कृत्रिम बुद्धि और डेटा के डिजिटाईजेशन एक दूसरे के पूरक हैं और सभी कार्य आसान होने वाले हैं, कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

**दीनानाथ शर्मा**  
सहायक नियंत्रक (यां.)  
द्वाघानि, बोताविके, बोकारो





**संस्कृति**



## प्रकृति को गोद में : यात्रा की राह ही असली मंजिल है

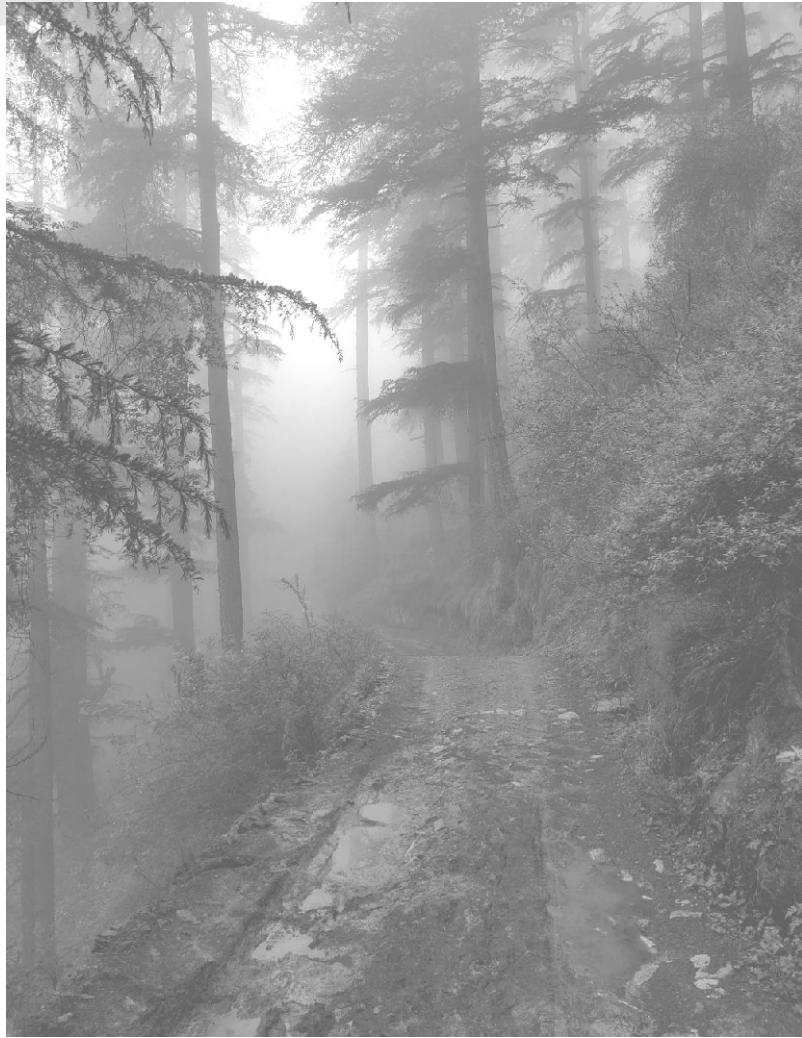
यह चित्र एक धुंधले वनपथ को दर्शाता है, जो ऊंचे पाइन पेड़ों से घिरा हुआ है। इस रहस्यमय मार्ग की वक्रता और

कोहरे की परतें जीवन की गहरी सच्चाई को उजागर करती हैं। जैसे हम इस धुंधले मार्ग पर कदम बढ़ाते हैं, यह हमें सिखाता है कि जीवन की असली सुंदरता मंजिल तक पहुंचने में नहीं, बल्कि यात्रा के हर पल में छिपी होती है। हर मोड़ और हर कठिनाई एक नई खोज और अनुभव का अवसर होती है।

जंगल के बीच से गुजरते हुए, हम महसूस करते हैं कि इस वनपथ की जटिलताएँ और पेड़ों की ऊँचाई जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाती हैं। यह मार्ग हमें यह समझाने में मदद करता है कि असली मूल्य यात्रा के अनुभव में निहित है, न कि केवल अंतिम गंतव्य पर। हर धुंधला मोड़ और हर अवरोध एक नए अवसर को जन्म देता है, जो जीवन के वास्तविक सार को उजागर करता है।

इस चित्र में, वनपथ की रहन-सहन और उसकी धुंधली छटा यह स्पष्ट करती है

कि जीवन का असली गंतव्य यात्रा के हर क्षण में छिपा होता है। जैसे हम इस मार्ग पर यात्रा करते हैं, हमें समझ में आता है कि मंजिल से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं उन अनुभवों और खोजों का आनंद लेना, जो यात्रा के दौरान मिलते हैं। यही जीवन की सच्ची अर्थवत्ता है – जहाँ यात्रा ही असली गंतव्य होती है।



**कौस्तुभ सुशेव**  
द्वितीय वर्ष, आई.आई.टी. नागपुर  
बोकारो थर्मल, बोकारो





## प्रकृति को गोद में : शांति का निवास

हरी-भरी पहाड़ियों के बीच, ऊँचे-ऊँचे देवदार के पेड़ों की गोद में बसा यह छोटा सा लकड़ी का झोपड़ी प्रकृति की



गोद में शांति और सुकून का प्रतीक है। पहाड़ों के दिल में स्थित यह एकल कुटिया, एक आदर्श स्थल के रूप में उभरती है जहाँ समय की धड़कन धीमी हो जाती है और जहाँ शहर की भाग-दौड़ और शोरगुल से दूर, केवल प्रकृति की सुकून भरी आवाजें सुनाई देती हैं।

यह झोपड़ी हमें ऐसे स्थान की ओर ले जाता है जहाँ सादगी में भी अद्वितीय खूबसूरती छिपी हुई है। यहाँ की सुंदरता और शांति को देखकर ऐसा लगता है मानो हम एक ऐसे स्वप्नलोक में प्रवेश कर रहे हैं, जो केवल देखने में ही नहीं बल्कि आत्मविंतन और मन की गहराइयों को छूने का भी अवसर प्रदान करता है।

जब हम इस झोपड़ी की ओर देखते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो या हमें बुला रहा हो—एक अनछुए, अनजाने और शांतिपूर्ण दुनिया की ओर कदम बढ़ाने के लिए। इस चित्र के माध्यम से, हम उस अद्भुत अनुभव को साझा कर सकते हैं जो

इस प्राकृतिक खजाने में समाहित है और जो हमें सच्चे सुकून और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित करता है।

**कौस्तुभ सुशेव**  
द्वितीय वर्ष, आई.आई.टी. नागपुर  
बोकारो थर्मल, बोकारो





## प्रकृति को गोद में : मुस्कान की कहानी

जब मैंने उस वृद्ध हिमाचली महिला को देखा, तो उनकी पारंपरिक पोशाक और उनके कदमों की स्थिरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। मैंने विनम्रता से पूछा, “बुढ़ि अम्मा, क्या मैं आपका फोटो ले सकता हूँ? उन्होंने हंसते हुए जवाब दिया, “बुढ़ि अम्मा का फोटो लेते हो बेटा? उनकी मुस्कान और सहज अभिवादन दिल को छूने वाला था। मैंने कहा, “क्या करूँ, आप बहुत प्यारी लग रही हैं।” उनकी मुस्कान और भी स्थिल उठी, और मैंने तुरंत उनकी उस सजीव मुस्कान का फोटो ले लिया।



इस तस्वीर ने मुझे यह एहसास दिलाया कि पहाड़ों में बसे गांव के लोग किसी प्रकार के भागने का विकल्प नहीं रखते। जब हम अपने शहरों की भाग-दौड़ और तनाव से थक जाते हैं तो हम यहाँ आकर शांति की तलाश करते हैं, लेकिन यहाँ की आत्मनिर्भरता और संतोष की जीवनशैली एक अलग ही परिप्रेक्ष्य पेश करती है। इन गांव वालों के जीवन में संतोष की चमक उनकी आंखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे अपनी मेहनत और जीवन से खुश हैं, और उनकी सरलता हमें सिखाती हैं की असली खुशी

बाहरी दबाव और व्यस्तता से नहीं बल्कि अपने कार्य और जीवन से गहरे संबंध में होती है।

उनकी मुस्कान में समय की मिठास और जीवन के अनुभवों की गहराई छिपी हुई है। यह पल हमें यह सिखाता है कि पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक धरोहर की सजीविता किस प्रकार हमारे जीवन की जटिलताओं से परे एक शांति और संतोष प्रदान करती है। उनकी उपस्थिति और मुस्कान ने एक अनमोल क्षण को जन्म दिया, जो हमें यह याद दिलाता है कि सच्चा सुख और मानवीय गरिमा साधारण जीवन में भी मिल सकती हैं। यह चित्र, मुस्कान की उस कहानी को दर्शाता है, जो पारंपरिक जीवन की सादगी और उसके अनमोल अनुभवों को बयां करती है।

**कुनालिका अद्वेता**

चतुर्थ वर्ष, आई.आई.एस.ई.आ., श्रोपाल  
डीवीसी कॉलोनी, बोकारो थर्मल, बोकारो





## प्रकृति को गोद में : ॥ अंतः अस्ति प्रारंभः ॥

सूरज का अस्त होना एक अद्वितीय संकेत है, जो हमें जीवन की गहराई और निरंतरता की ओर ले जाता है। जब



सूर्य अपनी अंतिम किरणों को पर्वतों के पीछे छुपा लेता है, तो उसके साथ ही एक दिन की समाप्ति का सिलसिला भी खत्म होता है। इस दृश्य में बादलों की हल्की चादर और सूर्य के अस्त की पृष्ठभूमि हमें यह एहसास दिलाती है कि हर समाप्ति केवल एक चक्र की समाप्ति नहीं, बल्कि एक नए दौर की शुरुआत का संकेत है।

जब सूर्य अस्त होता है, तो उसके पीछे की छाया और शांति हमें यह सिखाती है कि हर

कठिनाई और समापन के पीछे नए अवसर छुपे होते हैं। इस चित्र में, पहाड़ों की ठंडी चुप्पी और सूर्य की सुनहरी छाया मिलकर जीवन की नश्वरता और उसकी निरंतरता की कहानी सुनाते हैं। यह हमें बताता है कि किसी भी अंत को एक नए अध्याय के रूप में देखना चाहिए, क्योंकि यही जीवन का वास्तविक सौंदर्य है।

सूरज के अस्त होने का यह चित्र हमें प्रेरित करता है कि हम हर समाप्ति को एक नए आरंभ के रूप में देखें। जैसे सूर्य का अस्त होना रात की शुरुआत का संकेत है, वैसे ही जीवन के हर कठिन पल को एक नई सुबह के आगमन की उम्मीद के रूप में मानें। इस भव्य दृश्य में छुपी कहानी हमें यह सिखाती है कि हर अंत वास्तव में एक नई शुरुआत की दिशा में एक कदम है।

**कुनालिका अद्वेता**

चतुर्थ वर्ष, आई.आई.एस.ई.आर., धोपाल  
डीवीसी कॉलोनी, बोकारो थर्मल, बोकारो





## आज का मोबाइल

आज दुनिया का सबसे ज्यादा उपयोगी चीज मोबाइल है हर वक्त इंसान के साथ और हाथ में मोबाइल ही, आज के आधुनिकीकरण में देखा जाए तो मोबाइल की उपयोगिता सर्वाधिक और महत्वपूर्ण भी है पर दूसरी तरफ देखा जाए तो मोबाइल सबसे ज्यादा सबका समय खा रहा है। तब मुझे अपनी कलम से कुछ ऐसी कविता लिखनी पड़ी।

बच्चों का बचपन, जवानों की जवानी ।  
मोबाइल ने लिख दी, सबकी कहानी ॥

सबका समय, इस मोबाइल ने पकड़ लिया ।

जबानों को छोड़ो, नौनिहाल को भी जकड़ लिया ॥

बच्चा दृढ़ पीने से पहले, मोबाइल मांग रहा है ।

मोबाइल से आंखें गढ़ा कर, रात रात जाग रहा है ॥

छीन लिया मां से मोबाइल ने बचपन ।

छीन लिया पिता से मोबाइल ने लड़कपन ॥

छीन लिया खाना खाने का समय ।

छीन लिया मिलने मिलाने का समय ॥

छीन लिया मां को देना वाला वक्त ।

छीन लिया पत्नी को देना वाला हक ॥

छीन लिया बहिन से बतियाने का समय ।

छीन लिया दोस्त से दोस्ती का समय ॥

छीन लिया नाते रिश्तेदारों का समय ।

छीन लिया तूने परिवारों का समय ॥

खाना चवाने के बजह हम गटक रहे हैं ।

मोबाइल की रंगीन दुनिया में भटक रहे हैं ॥

मोबाइल हम सबका समय खा रहा है ।

मोबाइल से सीख रहे मोबाइल ही सिखा रहा है ॥

मोबाइल तो बस एक बतियाने का जरिया है ।

नेट ने हम सबका बदल दिया नजरिया है ॥

मोबाइल ने हम सबको जो जो परोसा है ।

अपने मां बाप से ज्यादा मोबाइल पर भरोसा है ॥



**संजय कुमार राय**

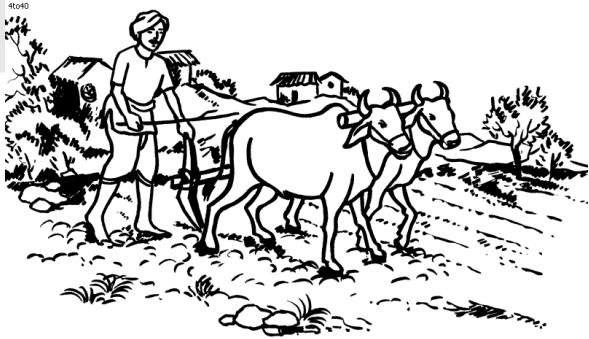
परिचालन अनुभाग  
द्वाघानि, बोताविके, बोकारो



संस्कृति



## कृषक वेदना



बरसा रहा रवि अनल,  
भूतल तवा सा जल रहा।  
है चल रहा सन सन पवन,  
तन से पसीना ढल रहा ॥

देखो कृषक शोणित सुखा कर  
हल तथापि चला रहे।  
किस लोभ से इस आंच में,  
वह निज शरीर को जला रहे ॥

मध्यान में उनकी स्त्रियाँ,  
आ पहुंची रोटियाँ लेकर वहीं।  
है, खबर सूखी रोटियाँ,  
साग उनको भी नहीं ॥

संतोष से खा कहकर उन्हें वे,  
काम में फिर जुट गए।  
भर पेट भोजन पा गए तो  
भाग्य मानों जग गए ॥

**आदर्श मधुप**  
वरीय प्रबंधक (यां.)  
द्वाधानि, बोताविके, बोकारो



## हिंदी साहित्य परिषद के 50वीं वर्षगांठ पर कविता

बोकारो ताप विघुत केंद्र का हिंदी साहित्य परिषद महान,  
पचास वर्षों की यात्रा, शिक्षा का अभिमान।

किताबों की महक से, हर कोना महकता,  
ज्ञान की इस ज्योति में, हर दिल धड़कता।  
शब्दों का ये संग्रहालय, ज्ञान की अनंत गंगा,  
हर पन्ने में छिपा है, ज्ञान का अफसाना।

बोकारो का यह पुस्तकालय, अद्वितीय धरोहर,  
शिक्षा का मंदिर, यहां हर कोई निखरा।  
बोकारो की इस धरोहर का, हम सब करें मान,  
ज्ञान की इस गंगा को, मिले अनवरत सम्मान।  
पढ़ने की चाह में, मन मस्त हो जाता है,  
हर किताब में छिपा, एक नया रबाब दिखाता है।  
पचास साल की यात्रा, कितनी सुखद और न्यारी,  
इस ज्ञान के सागर को, हमारा नमन और बधाई प्यारी।  
यह यात्रा, कितनी अनमोल हुई,  
पाठकों का प्यार, इसमें खुशबू सी घुली।  
ज्ञान की इस रोशनी को, हमेशा जलाए रखना,  
हर पन्ने में बसी है, सच्चाई को गहराई से अपनाना।

इस सफर को यूँ ही, आगे बढ़ाते रहेंगे,  
ज्ञान के दीपक को, यूँ ही जलाते रहेंगे।  
बोकारो के इस पुस्तकालय की, यश गाथा गाएं,  
आओ मिलकर मनाएं, इस सफर का जश्न अनोखा,  
50वीं वर्षगांठ पर, हम सब साथ मिलकर  
स्वर्णियाँ मनाएं।

**रवि कुमार सिन्हा**  
सहायक हिंदी अधिकारी  
द्वाधानि, बोताविके, बोकारो

